"मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं (यीशु) ही हूं ।" यूहन्ना १४:६

जीवन का मार्ग

Hindi

www.thelivingway.in

Volume 12 | Issue 32 | May 2021

EDITORIAL BOARD

Publication Director
Pr. LIVINGSTON ZECHARIAH

Chief Editor
Sis. BINCY LIVINGSTON

Team
Pr. JOANSON ZAHARIYA
Pr. DANIEL P.S.
Pr. BIJU KOSHY
Bro. JOHN K. ALEXANDER
Bro. JOHN P. ANTONY
Bro. IMMANUEL MANI
Bro. BALASUNDARAM
Sis. MEENA AMUTHAN
Sis. SOPHIE VARUGHESE
Sis. SUSAN SARAH GEORGE
Sis. SHARINE J.

Computer Designing
ANON GRAPHIX
Chembur

Printing
BHANDUP OFFSET

Publisher
THE LIVING WAY MINISTRIES
Mumbai - 400 078.

CONTENTS

मन खोलकर आपसे 3
परमेश्वर के चुनाव 4
लिख ले एक अच्छा बात 7
प्रसिद्ध स्त्रीयाँ 8
प्रतीक्षा थोडता पीढी 12
जीवन की मार्ग मिषनरी सेवकाईयाँ .. 14

Hear our new worship song
KALANGARAI VILAKKAAM

YouTube

www.youtube.com/livingwayindia
LIVINGWAY MEDIA
LIKE | SHARE | SUBSCRIBE

For your Offerings & Donations ......
The Living Way Ministries
and Charitable Trust
A/c. No. 35061155727
(or) Livingston Zechariah
A/c. No. 10870977445
State Bank of India,
Bhandup Branch (0562), Mumbai.
IFS Code : SBIN0000562

सुविचार

हम जानते है एक बुंद, हम न जानते है एक समुद्र

- Issac Newton

मन खोलकर आपसे ....

प्रभु यीशु मसीह के पवित्र नाम से मेरा नमस्कार।

''मेरा भेजनेवाला मेरे साथ है; उसने मुझे अकेला नही छोडा क्योंकि मैं सर्वदा नही काम करता हुँ जिससे वह प्रसन्न होता है।''(युहन्ना ८:२९) कितना सुन्दर वचन है।

पिता के इच्छा पूरा करने को अपने आपको दे दिया मनुष्य पुत्र है यीशु मसीह। संसार को बचाने आया यीशु को यह निश्चय था कि, जो मुझे भेजा है, वो मेरा साथ है। पिता के इच्छा के अंदर ही रहकर इस इच्छा पूरा किया। प्रभु यह जानता था कि, उसका इच्छा पूरा करना वो ही है उनका भोजन। इसलिये प्रार्थना के द्वारा निरंतर वह पिता से मिलने रहते थे।

परमेश्वर के साथ हमारे रिस्ता ऐसा ही होने चाहिए। जैसा मसीह पिता से संबध रखा था, वैसा हम भी प्रभु के साथ निरंतर संबध रखना है। यह प्रार्थना, उपवास और आराधना के द्वारा ही होता है। ऐसा लोग बताएगा कि, प्रभु मुझे अकेला न छोडेगा।

बडते जाता कोविड महामारी के बीच में, परमेश्वर के लोग यह समझना है कि, इस दुनिया नश्वर है। दुनियाधारी बातों के पीछे जाना अब बस हुआ। अभी भी जिन्दगी व्यर्थ न होना। हमेशा प्रभु की इच्छा पूरा करते जाना। प्रभु को प्रसन्न करते रहनेवालों को प्रभु यहाँ अकेला न छोडेगा। हाँ, 'जीवन की मार्ग' पढनेवालो को प्रभु यीशु से शांती और आशिष मिलते रहे। आमेन।

प्रभु में आपका भाई
लिविंगस्टन जकरिया

0 93245 59533
pastorzlivingston@gmail.com

परमेश्वर के चुनाव

Pastor Livingston Zechariah

परमेश्वर के चुनाव, मतलब क्या है? परमेश्वर किसको चुनते है? मनुष्य का कौनसा गुण के आधार चुनता है? कब चुनते है? किस लिये चुनते है? परमेश्वर और मनुष्य का चुनाव में का अंतर क्या है? ऐसा सवाल उठाता तो, एक व्यक्ति के बारे में परमेश्वर के इच्छा क्या है? यह पवित्र शास्त्र व्यक्त करता है।

मनुष्य का चुनाव की माप योग्यता और गुण है। अर्थात, आरोग्य, संपत्ती, सुन्दरता आदि है। योग्याता के आधार पर चुनता है तो भी मनुष्य की चिन्ता विभिन्न है। यह कैसा भी हो, पर, मनुष्य और परमेश्वर के चुनाव में बहुत अंतर है।

परमेश्वर के चुनाव का सबसे महान विशेषता

१) एक व्यक्ती जन्म होने से पहले ही प्रभु उसको चुनता है।

यह उसका कोई गुणों के अनुसार नहीं है। उदाहरण (यिरम्याह १:४,५) गर्भ ही से प्रभु मुझे बुलाया (यश. ४९:१) और परमेश्वर का भक्तों का चुनाव के बारे में वचन बताता भी है। (यशा. ४३:१, लुका १:१४).

२) जो मनुष्य के दृष्टि में उपयोग शून्य है, ऐसा लोगों को प्रभु चुनाया है।

एक बडा कार्य करने केलिये ही मूसा का जन्म हुआ था। (निर्गमन ४:१०). मैं बोलने में निपुण नहीं, मैं तो मूह और जीभ का भूंदा हुँ (१ शामुएल १६:१) भेडों को चराने को ही होगा ऐसा दाऊद का पिता और भाईयों सोचा, परन्तु परमेश्वर उसमें का राजा को देखा था। कोई ज्ञान का बिना लोग ऐसा चेलों पर दुनिया को लगा था, परन्तु दुनिया को हिलानेवाला लोग बनकर चेले सुसमाचार के गवाह बने थे।

इस प्रकार विशेष उददेश्य केलिये प्रभु चुना लागों का चरित्र पवित्र शास्त्र से हमें

इसलिये बताता है कि, हमारेलिये परमेश्वर के योजनाओं को हम समझें।

३) अनेकों का उद्दार केलिये परमेश्वर चुनाया मनुष्य

पवित्र शास्त्र में परमेश्वर ऊचा किया सबी साधारण लोग था। फिरौन का हाथ से अँगुठी निकालकर यूसूफ के हाथ में पहनना दिया। (उत्पत्ती ४१:४२-४३).

एक साधारण मनुष्य यूसुफ के जीवन में यह हुआ तो, उसका पीछे हम न चाहता एक इतिहास भी है। अनेक दिनों का प्रार्थना और आसु का फल के रूप में, याकूब और राहेल को दिया, राहेल की निन्दा को दूर किया बेटा था याकूब का प्यारा यूसुफ। (उत्पत्ती ३०:२३-२४).

इस यूसुफ का जिन्दगी को तीन भाग कर के हम पढेगा।

१) जन्म से लेकर मिस्त्र तक का पहला भाग। यह पराजय का समय है। (उत्पत्ती ३०:२२, ३७:३०)

२) मिस्त्र पहुँचने से अधिकारी होने तक। यह अभ्यास का समय है। (उत्पत्ती ३९:१-४१, ३६).

३) अधिकारी से मृत्यु तक। यह विजय का समय है। (उत्पत्ती ४१:३७, ५६:२६)

पहला भाग से दूसरा भाग में पहुँचा तो कुछ चैन मिलेगा जैसा सोचा। क्योंकि पहला भाग उसका जिन्दगी का भयानक दशा था। पिता के प्रिय पुत्र रंगाबिरंगा आंगरखा पहनके आया तो उस को गडडे में गिरा दिया। गुलाम बना और दूसरा कपडा पहनाकर मिस्त्र में पहुँचाया। दूसरा भाग में उसका सामर्थ प्रकट हुआ, फिर भी बिना गलती से बन्दीग्रह पहुँचा। ये सब एक स्वप्न देखने के कारण हुआ था। उसने स्वप्न देखा तो गडड़ा में डाल दिया गया, परन्तु परमेश्वर राजा को स्वप्न दिखाकर उसको बन्दीग्रह से बाहर लाया। हाँ प्रियों, तुझे ऊँचा करने को परमेश्वर कुछ लोगों को स्वप्न दिखाएगा। हमेशा नीचा नहीं है, परमेश्वर ऊँचा किया तो किसी को रोख न सकता है।

दूसरा भाग अभ्यास का था, वहाँ से, यूसुफ का जीवन में एक दौडना था। अभ्यास को पूरा करनेवालों को विजय का भाग इतजार कर रहा है। तीसरा भाग में आया तो राजा आंगूँटी उसका अंगुली में डाल दिया। यहाँ तक आने को समय लगेगा। एक जन को प्रभु ने चुना तो, उस योजना पूरा होने को समय लगेगा। परन्तु अंतिम में विजय होगा।

यदि यूसुफ की जिन्दगी की ओर देखा तो, जय पाने केलिये हमारे जिन्दगी में भी कुछ घटना होने का है। हम पहला विभाग में है तो समझना है कि, एक अभ्यास का भाग भी है। या, यदि दूसरा भाग में है तो, जल्दी से हमें एक तीसरा भाग में ले जाना है कर के समझकर विश्वास से तैयार रहे। क्योंकि, अगुटी डालना और सुन्दर वस्त्र पहनने का समय आ पहुँचा है।

युसुफ चुना हुआ एक व्यक्ती है तो भी कुछ कष्टों से उसको जाना पडा था। लेकिन चुनााया हुआ प्रभु है तो, वह उसका साथ रहता है। इसलिये जहाँ वह जाता था, वहाँ सब कुछ सफल होता था।

ये सारे कष्ट क्यों है करके पवित्रशास्त्र दिखाता है। बहुत से लागों के प्राण बचे (उत्पत्ती ५०:२०) प्रिय भाईयों, तुम्हारे जिन्दगी में भी इस प्रकार के कष्ट आया होगा। लेकिन, प्रभु को तुम्हारे लिये योजना है। इसलिये यह समझे कि, तुम्हारे द्वारा कुछ असाधारण काम के लिये प्रभु ने चुनाया है।

पलहा भाग में यूसुफ पिता के प्रिय पुत्र था तो, दूसरा भाग उसको बन्दीग्रह का वास था। लेकिन, हरदम पराजय न होगा करके दिखाता एक विजय का तीसरा भाग उसका जीवन में आया। उसी प्रकार तुम्हारे जीवन में भी कुछ पराजय आ सकता है। लेकिन हमेशा पराजय नही है, किन्तु अनेकों को बचाने के लिये परमेश्वर कुछ उद्देश्य से तुमे चुना है। प्रभु साथ है समझकर बुलाहट की मूल्य ग्रहण करते हुए आगे बढे। तुम्हारे बारे में परमेश्वर को विशेष योजना है। बहुतों को उद्दार मिले। और हर समय प्रभु तुम्हारे साथ है।

बाइबिल क्वीस – उत्तर

१. प्रभु परमेश्वर
२. यहोवा हमारी धार्मिकता है। (यीर. २३:६)
३. यहोवा हमारा परमेश्वर है। (भ.सं. ९५:५,८,९)
४. सेनाओं का यहोवा (१ शमु. १:३)
५. यहोवा मेरा बनानावाला है। (भ.स. ९५:६)
६. यहोवा मुझे चलाता है। (यश. ५८:१)
७. यहोवा मेरा शालोम (न्यायी ६:२४)
८. यहोवा परम पवित्र है। (भ.स. ७:१७, ९९:९)
९. यहोवा मेरा झडा है। (निर्ग. १७:१५)
१०. यहोवा संभालेगा (उत्पत्ती २२:१)

लिख ले एक अच्छा बात

Binu Jospeh, Vadasserikkara

नया साल पहुंचा, और तीन महीना बीत गया। कोरोणा महामारी का २०२० से २०२१ तक आना आसानी नही थी। लेकिन हम सुरक्षित है, इसलिये परमेश्वर को धन्य कहे।

एक नया पुस्तक की जैसा इस साल शुरु हुआ है तो, उस में क्या लिखना है, यह खुद पैसला ले। कुछ लोग यहाँ कुछ भी करते रहेगा, कुछ लोग पन्ना फाड देगा, कई लोग उस में अच्छे से लिखेगा, और यह दुसरे को प्रोत्साहति और उत्तेजित करेगा। कई लोग बिना लिखकर उसको रखेगा।

बिना विरोध का दिनों

किसी से कुछ विरोध न रखना, प्यार और क्षमा से लोगों से मिलते रहे। इस जिन्दगी में ऐसा कोई बात नहीं है कि, क्षमा न करे। विरोध मन से कब्र में न जाए। नीतिवचन यह कहता है कि, प्यार अपराध को छिपाता है।

आलसी और उदासी मन को छो्ड दे

आलसी मन शैतान का काम का क्षेत्र है। आलसी व्यक्ति सदा कुछ रुकावट को देखते रहेगा। आज खत्म करने का कार्य कल केलिये न रखना। हमारा जीवन में इस से महत्व दे कि, 'हर एक दिन हमारा अंतिम दिन जैसा है।'

उपकार और मदत को न भूलना

हमारे जिन्दगी परस्पर मदत करने से रहता है। हो सकता है तो, हर दिन उपकार करे। सहायता का वर मसीहायत का दान है। भलाई करना एक आत्मीक फल है।

यांकल-एक यहूदी व्यापारी था। वह हमेशा बताता एक अनुभव है। थड़ी का समय नासी आंतकवदियों ने उसको एक रेल डिब्बा में कहाँ तो ले के गया। उसका साथ जानेवालों को भी वह न जानता था। घोर अंधकार, तब उसका समीप एक बुजुर्गा का आवाज सुना। थंड होकर बैठता उस मनुष्य को उसने गरम किया। सुबह यह देखा कि, सिर्फ वे दोनों ही इस डिब्बा में जिन्दा है। क्योंकि, बाकि सभी जन उस थंडी में मरा था। ये दोनों इसलिये जिन्दा था कि, वो शरीर पर गरम किया और चलते रहा थे।

नया साल में दूसरे को शांती दे। हमारी जिन्दगी दूसरों केलिये है। आपस में भोज उडाते रहे।

प्रसिद्ध स्त्रीयाँ

Mrs. Bincy Livingston

दु:ख भरा स्तिथी में जिन्दगी बिताते रहता मरीयम मग्दलनी को, मसीह से मिला छुटकारा एक बडी प्यार की व्यक्ति बनाई। प्रभु से दूर न जा सकती उस स्त्री अपनी जिन्दगी प्रभु केलिये दे दिया थी। इसलिये, मरीयम यीशु का पीछा करता ही रहा था। पवित्र शास्त्र में मरकुस की माता मरीयम नामक कई स्त्रीयाँ के बारे में बताता है। उस में से एक प्रमुख स्त्री थी मरीयम मग्दलनी।

पवित्र शास्त्र की मरीयायें

१) यीशु का माँ मरीयम (मत्ती १:१६)

२) बेतानी की मरीयम (लुका १०:३९)

३) क्लोपास की पत्नी मरीयम (युहन्ना १९:२५)

४) मरुकस की माता मरीयम (प्रेरित १२:१२-१७)

५) मरीयम मग्दलनी (लूका ८:२)

६) रोम का एक विश्वासी मरीयम (रोम. १६:६)

मग्दलनी मरीयम 'मग्दलनी' नामक गाँव मे से थी। गलील समुद्र की पश्चिम की ओर तीबरयास नामक शहर से तीन कीमी उत्तर की ओर का एक गाँव था 'मग्दलन'। उस गाँव के नाम पर वह जानती थी, पर उसकी माता-पिता के बारे में कुछ जानकारी नहीं है। लेकिन वह एक धनी स्त्री थी। सात दुष्टात्माओं से ग्रस्त थ जैसा पवित्रशास्त्र उस की बारे में बताता है। सात दुष्टात्माओं से वह परेशान थी। इसलिए वह यीशु को प्यार करते हुए पीछा किया। कितना प्रतिकूल जीवन में आता है, उतना विश्वास करेंगे तो परमेश्वर देता छुटकारा भी बडी होंगे। इस बहुमूल्य छुटकारा से मरियम यीशु को प्रेम करने का कारण दिया। इसलिये मरियम यीशु को पीछे करता ही रही थी। किसी को भी न टुटा सकता एक मजबूत रिस्ता। यीसु का प्रेम कितना मधुर है। यह मरयिम अनुभव किया था।

छुटकारा पाया मरियम क्या किया था? छुटकारा पाया हम क्या करना है?

१. अपनी संपती से सेवा किया। (लुका ८:१–३)

मरियम को मिला छुटकारा से वह प्रभु की सेवा में भाग हुई। वह यीशु और चेलों को भी सेवा किया। उस समय का रब्बीयाँ दान, जो भक्ती से देता था, वो स्वीकार करता था। लेकिन स्त्री से स्वीकार करना मना करता था। विशेष कर यहूदी रब्बीयाँ घर का बाहर अपनी पत्नी से भी बातें न करता था। लेकिन स्त्री–पुरुष का भेद के बिना यीशु लोगों को प्रेम किया और छुटकारा भी दिया थे। प्रिय लोगों क्या तुम मसीह से छुटकारा पाया है? तो तुम जरुर प्रभु के सेवा केलिये देना चाहिए।

२. यीशु को सेवा करते हुए पीछा किया (मत्ती २७:५५–५६)

सेवा करने से भी बडकर यीशु को पीछा करता मरियम को दर्शाता है। छुटकारा के बाद वह यीशु के साथ चलकर उस चंगाई के बारे में लोगों को बताते रही थी। मरीयम मग्दलनी के नाम पवित्रशास्त्र में कई जगह पर लिखने से, यह हो सकता है कि वह एक नेता के जैसा रहकर अन्य स्त्रीयों को भी यीशु का पीछे करने को प्रोत्साहित किया होगा। यह कैसा भी हो, पर वह प्रोत्साहित थी।

मरयिम की जिन्दगी हमारे लिये प्रभु का एक संदेश है। क्योंकि यीशु चेलों को चुनते ही उनको कहा कि 'मेरा पीछे हो ले'। लेकिन बिना किसी संदेश से वह मसीह की सेवा करते हुए पीछा किया तो हम भी यीशु को पीछे करने से दूर न जाना। क्योंकि हमे दिया छुटकारा का गहराई कितना बडा है। हम यीशु के गवाह बनना चाहिए। जो मिलते है उस अवसर पर यीशु की सेवा करे।

३. पीछा किया स्त्रीयाँ दूर से देख रही थी (लूक २३:४९)

यीशु को पीछा किया बहुतो ने क्रूस छडाता समय दूर खडे रहकर रोया और वापस चला गया। लेकिन मग्दलनी मरियम और अन्य स्त्रीयाँ उस पीढा को देखकर वहाँ खडी थी। क्योंकि पीछले दिनों में वे यीशु को सेवा करते ही रहा था। एक बूँद पानी लेने को भी न होते हुए वे स्त्रीयाँ वहाँ खडी थी। क्योंकि, क्रूस में का मृत्यु एक स्त्री को सहन करने से ही बाहर है।

मसीह के साथ हमारा मन भावना कैसे है? यीशु को क्रूस पर छुडाने का दृश्य देखकर हम न रोना, परन्तु किस उद्देश्य केलिये क्रूस पर चढाया है उस कार्य हमे पूरा होना है। और हमें ऐसा मन होने का है कि, सब लोग यीशु को छोडकर जाएगा तो भी मैं उसे दूर न जाऊँगा।

४. मरियम कब्र में जाकर देख लिया (मरकुस १६:४)

कब्रस्थान में स्त्रीयाँ न जाती है। क्रूस पर छडाना या कब्रस्थान साधारण लोग विशेषकर स्त्रीयाँ को देख ने को भी न हो सकता है। लेकिन यहाँ सब घटना देखने के बाद मरियम मग्दलनी कब्र में भी आयी है। क्योंकि, उसकी दिल दूसरा योजना केलिये तैयार कर रही थी। यहुदियों के परंपरा के अनुसार सुगंन्धित वस्तु लगाना एक कर्म है। यह यीशु को न मिला है। इसलिये बहुत बडा योजना से वो वापस चली गई। लेकिन यीशु का जीवन ही अनेकों केलिए सुगंन्दित है।

५. सुगंन्धित वस्तु लेने जा रहे है (मरकुस १६:१)

यहाँ अनेक सवाल आते है। यीशु को रखा कब्र ओर उस पत्थर उसने देखी है। और यह भी जानती है कि, उस पत्थर निकाल न सकती है। फिर मरियम क्यों सुगन्ध लेने जा रही है? दूसरा, सुगंन्धित वस्तु लगाने को क्या अनुमती मिलेंगे? ये सब जानते है तो भी वह रुकावट के बारे में न सोची। क्योंकि प्यार की गहराई से सब रुकावट को भूल जाती थी। प्रियों, कई बार रुकावट को सोचकर बाहर न जाते थे। और जाते ही बताता है कि, कौन हमारेलिये उस पत्थर निकालेगा? लेकिन उस प्रेम की कारण उसकी मन दृड होता था।

यीशु के पास आते ही, अपने दूत को आज्ञा देकर भेजा था। पत्थर निकालने को मरियम से न होगा प्रेमी प्रभु यह जानता है। इसलिये, वह यीशु के पास आते तो ही प्रतिकुल, छुटकारा के रुप में बदला था। उस केलिये दूतों ने पत्थर निकाला था। प्रियों, यीशु के पास आते है तो छुटकारा भी होते रहेगा। क्या जिन्दगी में समस्या है? यीशु के पास आओ। अपने दूत को भेजकर वह छुटकारा देगा।

६. अति भोर को कब्र में पहुँचा (लुका २४:१)

शबत होते हुए ही वे सुगन्धित वस्तु को ले आई। पीछले दिन उसने जाकर देखी थी। क्योंकि शबत का दिन कुछ करना मना है, तो, मरियम जल्दी चली गई और सुगंन्धित वस्तु लाई। उस रात को न सोते हुए भोर को अपने प्राण प्रिय को देखने जा रही थी। अगर सुरज आने से पहले वहाँ पहुँचना है तो कितना जल्दी से वह तैयारी किया और गया होगा।

इस कार्य में वह आगे कुछ भी न सोचे थे। यह न सोचा की रस्ता में क्या होगा? न संदेह किया है कि क्या पुरुष उसको अन्दर जाने को देगा? आरोपण होने के कारण उसकी ऊपर आरापण लगायेगा क्या? लेकिन ये सब रुकावट को पार करते हुए कब्र तक पहुँची।

७. उस ने यीशु के शरीर माँग रही है। (युह. २०:१५)

यह यहाँ पर सोचना है कि एक स्त्री की चिन्ता किस प्रकार है, हर प्रतिकुल को पार करते हुए वह कब्र में पहुँची। वहाँ आकर देखा तो शबत के पहले रखा शरीर अभी वहाँ नही है। वह दु:ख से रोते खडा था, तब यीशु उसको दिखाई दिया। शवशरीर पर सुगंन्धित वस्तु लगाने को आया स्त्री के सामने सुगंन्धित रुप में प्रभु प्रकट हुआ। और अन्य किसी के पास आने से पहले यीशु उस को दिखाई दिया।

प्रियों, प्यार करते लोगों केलिये सब भलाई में बदलता है। दुनिया का सब विश्वासियों के पहले मसीह को देखना और उसका गवाई होने का भाग्य मरियम मग्दलनी को न मिला। सब से बडकर प्रेम किया है तो, किसी और को न मिगा सौभाग्य मरियम को मिली। सुसमाचार का पहला गवाई मरियम का है।

मरियम की जिन्दगी से हमे सीखने को बहुत मिलते है। जो छुटकारा पाया है वो कभी भी न छो्डता प्रभु को पीछा करना है। अपना धन से प्रभु की सेवा केलिये खर्च करना है। पीछे आता समस्या को पार कर के एक छाया के समान आगे जाना है। प्रश्नों को बडाकर न देखनाा, यीशु को देखा मरियम दौडकर यह बात उसके चोलों को बताने जैसा सुसमाचार केलिये दौ्डे। अनेक लोगों को यीशु में लाने को प्रभु आपको सहायता करे। •

ASSEMBLIES OF GOD
ALL THE GOSPEL
AG

We Prayerfully Invite You & Your Family
To Join Our Congregation

LIVING WAY A.G. CHURCH

14/1, Sunita Estate, Shastri Nagar, Opp. Jainan Hall,
L.B.S. Marg, Bhandup (W), Mumbai - 400 078.
Mob.: 93245 59533 / 98676 34153

Worship Timings Every Sunday
9.00 am to 10.30 am - Malayalam & English
10.30 am to 12.30 pm - Tamil & Hindi
5.30 pm to 7.30 pm - Hindi & English

www.thelivingway.in

YouTube : www.youtube.com/livingwayindia

प्रतीक्षा थोडता पीढी

J. P. Vennikulam

इंजिनिरिंग का पढाई केलिये (सूसन) बाँगलूर आयी है। सबी से ज्यादा बातें करता सूसन को बहुत दोस्ती कम समय से मिली। पढाई में अच्छे से आगे बढा उसको कुछ रस्ता भी खुली थी। वह जब अपनी गाँव में थी तब सण्डेस्कुल और आत्मीक कार्यों में लगी रहती थी। क्योंकि उस परिवार आत्मीक बातों में बहुत आगे बढता एक था।

उसकी दोस्तों में ज्यादा लडके थे। लेकिन यह सीमा के पास न जाता था। उसकी पढाई शुरु हुई। वहाँ रहने को एक अच्छे कमरा और दोस्ती भी ज्यादा मिले। ऐसा जाता एक दिन उसको फेस बुक में एक फ्रेण्ड रिक्वस्ट आ गई। यह एक अच्छा जवान का है, और वह उसे माना और चाटिंग करने लगी। उसके बाद में मालुम हुआ कि, यह उसी कॉलेज का एक अध्यापक है। इसलिये वह सामने से मिलकर बातें करने को सोची। धीरे-धीरे वे दोनों मिलकर यात्रा करना और भोजन करने लगी। पिछले दिनों का सारा वातावरण से अजादी होकर आगे चला और स्नेह की अवस्ता में आई। ऐसा चलकर पढाई में पीछे पडा और उस अध्यापक का बातचित से उसने होस्टल के बाहर एक घर लिया। यह उसका समीप था तो और ज्यादा मुलाकत और दोस्ती का मौका मिला। अकेला रहता अध्यापक कई बार उसकी कमरा में आता था, लेकिन, यह देखकर सूसन की साथ रहनेवाले भी कुछ न कहे थे।

ऐसा एक दिन सूसन की अध्यापक का घर में उसको बुलाया। उस में कुछ शंक न थी तो वह वहाँ पर चली गई। यह एक छुट्टी का दिन था, और अध्यापक ने अच्छे भोजन तैयार करते हुए इंतजार कर रहा था। वे एक साथ मिलकर भोजन लिया। वो शराबी अध्यापक उसको जबरदस्ती करने से वह भी पी लिया और बेहोश हुआ। उस के बाद क्या हुआ यह न जानते हुए उस घर में ही सो गई। परन्तु अध्यापक क्या चाहता था वो सब उसने उससे किया था।

कुछ दिन के बाद उसने जान लिया कि वह गर्भवती हुई। इस बात उसको घुसा होने का कारण हुई। और उस अध्यापक से घुणा किया। उस आदमी को डरते हुए, पढाई

छोडा और वापस गाँव चली गई। वहाँ किसी से कुछ न कहते हुए घर का भीतर एक कमरा में रहने लगी।

यह इस प्रकार का अनेक घटनाओं से एक है। इसी प्रकार कितनी अनुभव बडे-बडे शहरों में होता है। अपना पवित्रता को नष्ट करते हुए रहता पीढी। धन कमाने केलिये अपना शरीर का नाश करने को भी तैयार है, इस प्रकार परमेश्वर का भक्ति नष्ट करता पीढी में फंस जाता जवानों का संख्या बहुत है।

अनुशासन में रहता परिवार और समाज से बाहर आता लोग इस प्रकार मिलता आजादी से अपने जिन्दगी नाश करते रहते है। यहाँ नियंत्रण करने को कोई भी नहीं है। माता पिता के साथ जो आदर हे वो नष्ट होकर, सिर्फ जो पैसा भेजता है उसी पर मन लगाकर चले जाता एक पीढी। पढाई का ध्यान छोडकर अपना यौवन का नाश करता है। यहाँ गलत किसको हुआ है? क्या आगे बढाया माता-पिता को? या पढाई दिया शिक्षकों को? क्या आत्मीक जिन्दगी सिखाया कलीसीया को? ये सवालों का उत्तर कौन ढूंडेगा?

आज शिक्षण को न चाहता एक पीढी बढता है। क्योंकि, जो शिक्षा देता है, उसको नफरत करता है। भलाई सिखाया व्यक्तियों को वे भूल जाता है। वचन पढता ही नही है और संगती छोड देते है।

आशा के साथ पढाई केलिये भेजता माता-पिताएँ याद रखना। आप जो सोचते है वो न होते है। आप ने स्वप्न भी देखा नही, ऐसा कार्य यहाँ होते है। क्या आप पीढी केलिये प्रार्थना करते है। क्या उनका जानकारी लेने को समय लेते है? मेरा बच्चा अच्छा है। कबी भी बुरे न होगा ऐसा सोचकर रहता है तो वो ठीक नही है। क्योंकि उकाब उसके चारों और नजर रखा है कर के याद रखिए। जागृत हो, उसके नाश न होना है, क्योकि वे प्रभु केलिये बढने का लोग है। ●

बाइबिल प्रश्नोत्तरी

१. अठोणाई
२. यहोवा सिदंकनु
३. यहोवा एलोही
४. यहोवा शब्बायोत
५. यहोवा अषेनु
६. यहोवा नक्का
७. यहोवा शालोम
८. यहोवा एलियोन
९. यहोवा निस्सी
१०. यहोवा यिरे

उत्तर - पेज नं ९

जीवन की मार्ग मिषनरी कार्य

उस समय बहुत सी जतियों यहोवा से मिल जाएँगी, और मेरी प्रजा हो जाएँगी; और मैं तेरे बीच में वास करुँगा। (जक २:११). जीवमार्ग की पढनेवालों को हमारे मिषेन की सेवा में स्वागत है। पिछले दिनों में आपके प्रार्थना और सहाय विविध रुप में मदत होता था। राजस्थान के आदिवासियों के बीच में २००८ से लेकर शुरु किया सेवा के रुप में वहाँ के बहनों को सिलाई का अभ्यास देने को सोचा और यह शुरु होने को भी मौका मिला। ६ महिना का इस कोर्स में ६ बैच से ७० बहनें इस में शामिल हुआ और इस में ज्यादा से ज्यादा लोग यीशु मसीह का विश्वास में आ गया है। गया साल शुरु हुआ कोविड महामारी के कारण ७-वाँ बैच शुरु होने न हुआ। लेकिन ये सब रुकावट को पार करते हुए आगे जाने को चाहते है। शिलाई का मुफ्त शिक्षा के लिये बहुत लोग आते है। इस में आप के प्रार्थना और सहाय देने को स्वागत है।

महाराष्ट्र के थाना और रायगड जिल्हा के सेवकाई अच्छे से हो रहे है। पा. दानियल और पा. राजेश यहाँ सेवा कर रहे है।

हमारा लक्ष्य :

१. महाराष्ट्र के ३६ जिलाओं में कम से कम एक आराधनालय की स्थापना करना।

२. अनपड लोगों के बीच विद्यालय शुरु करना।

३. राजस्थान के आदिवासियों के बीच करता समाज सेवा और भी सामर्थ से करना।

४. जो अच्छे से अभ्यास पूरा करता है उन दो व्यक्तियों को शिलाई मेशिन देना है।

५. हर एक बैच खत्म होते ही बहुत लोगों को साथ लेकर मिटिंग चलाना है।

इस के साथ ओर भी अधिक काम करने को चाहते है। परमेश्वर इस सेवा को आशिष करे और बढाएँ; अनेक जाति से लोग प्रभु में विश्वास करना और उनके बीच प्रभु का कार्य प्रकट हो, इस के लिये आप के प्रार्थना और सहाय माँगते है। प्रभु हम सब को अशिष करें।

तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा,
“गर्भ में रचने से पहले ही मैं ने तुझ पर
चित्त लगाया, और उत्पन्न होने से पहले
ही मैं ने तेरा अभिषेक किया;
मैं ने तुझे जतियों का भविष्यवक्ता
ठहराया”

यिरम्याह 1:4, 5)

www.thelivingway.in

Edited & Published by : Pr. LIVINGSTON ZECHARIAH,
on behalf of The Living Way Ministires, Mumbai - 400 078.